अमन का जज़ीरा और स्टीफन गिल

चारों ओर का असली संसार जब किसी कवि का काव्य संसार बनता है तो वह विशिष्ट और एक हद तक निजी हो जाता है। इसलिए हर कवि का काव्य संसार उसका अपना और किसी न किसी रूप में विशिष्ट होता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि आज की कविता में आज के जीवन की असलियत व्यक्त हुई है। पर अलग-अलग कवियों में उसका रूप भी अलग हो गया है। कविता की दुनिया अनुभव की दुनिया है। इसलिए उसका सम्बन्ध बाह्य वास्तविकता के साथ ही कवि के आन्तरिक जीवन से भी होता है। एक कवि का अनुभव, उसका चुनाव और उसकी दृष्टि उसे दूसरे कवि से अलग करती है।

स्टीफन गिल की कविता सर्वथा भिन्न और गैर रोमान्टिक जमीन की कविता है। यह कविता किसी एक क्षण या किसी एक घटना की अनुभूति नहीं है। यह उन वर्षों के बिखरे अनुभवों की कविता है जिसमें एक ‘‘गाता - बजाता हुआ देश’’ नंगा हो गया है। उनका काव्य संसार एक आम आदमी का संसार है। उस आदमी का संसार है जो आदमी से एक दर्जा नीचे रहने का दर्द झेल रहा है। इस आदमी का दर्द यही है कि उसकी मजबूरी ही उसकी सबसे बड़ी कमजोरी है। इस दर्द को कवि ने बड़ी आत्मीयता के साथ महसूस किया है -

लुटेर थे
पहले ही हर तरफ
आज फिर घर
मजबूरी ने लुटाया है।

अमीरी-गरीबी की खाई ही वस्तुतः सारे झगड़े-फसाद की जड़ है। एक तरफ शाही जीवन स्तर बिताने वाले नागरिकों का विकसित देश, सारी दुनिया पर हुकूमत करने वाला देश है, तो दूसरी तरफ भूखों - नंगों का देश और आतंकवाद की समस्या से ग्रस्त देश है। पर इन देशों की असली समस्या आतंकवाद नहीं बल्कि गरीबी है -

मालिक करते बातें अमन की
पर अमन कैसे आये
जब भूत हों भूख के खड़े
उगे हों जंगल बेसमझी के
घर हो आबाद गरीबी से।।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मजबूरी, गरीबी, भुखमरी अमन को छोड़कर जंग को जायज मानती है। जंग की कोई परिभाषा नहीं हो सकती। जंग के खौफनाक मंजर और भयानक परिणाम को कोई अन्त नहीं -

जंग क्या है
उन दोस्तों से पूछो
हाथ जिन्होनें कटवाये हैं
उन घरों से पूछो
गिद्धो के जहाँ साये हैं।।

X X X

जिन्दगी पहाड़ बना देती
हर तरफ दहशत फैलाती
सुख खो लेती सबका
जंग छुरा फरेब का।।

कवि दुश्मनों को भी आगाह करतें हैं जो यह सोंचतें हैं कि जंग के बाद परिणाम उनके लिए सुखदायक होगा। वह कड़वा सच बतातें हैं -

तीसरी जंग के बाद
न कुछ रहेगा
न हम ही रहेगें
न घर ही रहेगा
सूरज अकेला चमकता रहेगा।।

स्टीफन गिल दबी जबान में इशारा नहीं करते, वस्तुतः सच्चा कवि वही है जो सच्चाई को उजागर करने में घबराये नहीं। वह खुले आम उगुँली उठातें हैं -

पाकिस्तान तुझको
एक और सालगिरह मुबारक
क्योंकि
तेरे सिपाही
लोगों के हक की बुनियाद
सरकण्डा समझकर रौंद सकतें हैं

और खुदा के घरों से

जिन्दगी की जलती शमा

अब खून से बुझा सकतें हैं।।।

X X X

और एक डिक्टेटर की कमान से

कायद-ए-आजम के ख्वाब

अब सदा को सुला सकतें हैं।

स्टीफन गिल की कविता मनुष्य के केन्द्रीय प्रश्नों से जुड़ी हुई कविता है, जिसमें अमन, सुख, चैन, आजादी, जनतन्त्र, समाजवाद प्रमुख है। यह प्रतिबद्ध, प्रगतिशील और संघर्षशील चेतना की कविता है। इसका संसार ठोस, जीवित और प्रासंगिक है। कहना न होगा की यही उनकी कविता की शक्ति है। वस्तुतः कविता तब तक इस दहशत से भरे संसार में जीवित रहेगी, जब तक उम्मीद बची रहेगी, ख्वाब बचे रहेगें -

जनूनी रातों के जानवर

मेरा गला घोंट सकतें हैं

पर मेरे ख्वाब का नहीं।।

उनका ख्वाब अमन के जज़ीरे का ख्वाब है। एक नजर में देखकर यह कहा जा सकता है कि उनकी कविता जंग की कविता, जंग के खौफनाक मंजर की कविता है। समस्याओं, विद्रूपताओं की कविता है। पर पूरा सच यह नहीं है, पूरा सच तो यह है कि उनकी कविता जंग के खिलाफ खड़ी होती है और इस प्रकार उनकी कविता आशा की कविता बन जाती है। उल्लास, आस्था और उदात्त जीवन मूल्यों की कविता बन जाती है। उनकी कविता वस्तुतः अमन की कविता है। बाहरी जगत की कीचड़ और बदबूदार सड़ान्ध के बीच भी उन्हें आत्मा की आदिम सुगन्ध महसूस होती है, रूह की पुकार सुनाई देती है -

जज़ीरा मेरा

नगमा अमन का

जैसे पुकार रूह की

X X X

उस जज़ीरे के कोने में

एक झोपड़ी बनाऊं

सकून के सांस को

जहाँ अपनाया जिन्दगी ने

अमन का यह जज़ीरा कैसे बनेगा? कवि के अनुसार जब हर इन्सान एक दूसरे को अपना समझेगा और हम कदम होकर आगे बढ़ेगा -

चलो बढ़ें

हाथों में हाथ डाले

रोशनियों और अंधेरों के अन्दर

आँख चाहे बन्द

पर ख्यालों में एक होकर

राह दिखाते

कदम मिलाते।।

वस्तुतः स्टीफन गिल की कविता अमानवीय दबावों का विरोध करती है। अमन ही उनकी कविता की जमीन है और यह जमीन आज के कविता के मुहावरे से पूर्णरूपेण भिन्न है। आज की कविता में जो आक्रोश, विद्रोह और आक्रामकता की मुद्रा है, वह स्टीफन गिल की कविताओं में नहीं मिलेगी। उनकी कविताओं में एक गहरा काव्यानुशासन है और संयत मुद्रा है, मित कथन है। गिल की ताकत गोली-बन्दूक की नहीं, शब्द की ताकत है और कवि के शब्दों को यह ताकत निश्चित रूप से किसी न किसी प्रेरणा स्त्रोत से मिलती है। गिल को यह ताकत प्रकृति से मिलती है। वह अपनी कई कविताओं में प्रकृति से शक्ति प्राप्त करतें हैं। ''**उधार**'' शीर्षक कविता तो पूरी तरह से प्रकृति को समर्पित है। इस कविता में वह बादलों से, परिन्दों से, फाख्ताओं से, तितलियों से, बुलबुलों से और फरिश्तों से उनके शौक, उनकी मस्ती, उनके मस्ती भरे राग और उनकी मोहब्बत की सोच उधार मानतें हैं। क्योंकि इन सबकी ही आज के इन्सानियत के कंगाल आदमी को सबसे ज्यादा जरूरत है। वस्तुतः स्टीफन गिल का कर्म मात्र कवि कर्म नहीं है वरन् समाज के प्रति उनका उत्तरदायित्व है। सिर्फ कविता करने के उद्देश्य से स्टीफन गिल ने कविताएं नहीं लिखी बल्कि आतंकवाद, दुश्मनी, नफरत के खात्में के लिए जागरूकता लाने के लिए एक सार्थक पहल की है। वह स्वयं कहतें हैं कि - ''मैनें अपनी कविताएं यह सोचकर लिखी हैं कि तरक्की और अकल मन्दी का रास्ता यही है कि हम अमन के जज़ीरे में सांस लें और इस जज़ीरे को और भी खुशगवार बनायें।''

यही मकसद लेकर गिल जी ने अपनी कविताएं लिखी हैं - लिखीं हैं या यूँ कहिए की हम सब की ही भाषा में हमसे अपने खयालात बाँटे हैं और हमें रास्ता दिखाया है। यह सरलता, यह सादगी ही उनकी शैली है।

''शैली ही मनुष्य है'' (Style is the man!) - यह कथन उनकी कविता के सन्दर्भ में बिल्कुल सच है। स्टीफन की कविता सबसे पहले (और सबसे अन्त में भी) एक बातचीत है - झरने की तरह बहती एक बातचीत। बोलचाल की भाषा ही उनकी भाषा की सबसे बड़ी शक्ति है। वर्डस्वर्थ के अनुसार - ''कविता की भाषा यथासम्भव बोलचाल के करीब होनी चाहिए''

और असल में बोलचाल के करीब कविता की भाषा बनाये रखना ही मेहनत का काम है। विद्वता और पांडित्य प्रदर्शन के मोह में भाषा को जटिल और दुरूह बना देना तो आसान है।

ऐसा नहीं है कि कविता की भाषा हल्की है तो कविता में कही गई बात भी। बोलचाल की भाषा में भी गहरी से गहरी बात कह जाना गिल जी की विशेषता है। वे शब्दों का जो कमल फूल लेकर पाठकों के सामने उपस्थित होतें हैं वह मानसरोवर का फूल है। वह भी तीर से लाया हुआ नहीं, बीच से लाया हुआ। जिस कवि का अनुभव और चिन्तन स्पष्ट होता है उसकी भाषा भी साफ और सहज होती है। स्टीफन गिल की अभिव्यक्ति भी प्रयत्न साध्य या कृत्रिम नहीं है। वह अत्यन्त सहज है - निर्मल और प्रवाह पूर्ण जैसे मैदान में उतरी हुई नदी -

ख्याल तेरा
दिन चढ़ते आया है
आज फिर दिल पे
बादल ने घर बसाया है।।

जरा इन पंक्तियों को देखिए, कितनी सरलता के साथ स्टीफन गिल ने हम सबको बतला दिया है कि साल दर साल बीतते जा रहें हैं, कैलेण्डर बदलता जा रहा है, पर जब तक खुशहाली पूरी दुनिया में नहीं छायेगी, परिवर्तन नहीं आयेगा -

नया साल है तो क्या हुआ
यह साल वैसा ही है
जैसे गुजरा हफ्ता
यह साल का और दिन था
X X X
घड़ी की आवाज से

जिन्दगी लिबास नहीं बदलती
कैलेण्डर जरूर बदल जातें हैं
मुबारकबादी के खत भेजे जातें हैं
दावतें हो जाती हैं
इसे तब्दीली नहीं कहते
नया साल है तो क्या हुआ।।

स्टीफन की कविता और इसकी शब्दावली पर गौर करें तो सचमुच वह कहीं हलफनामा लगती है, कहीं वक्तव्य - एक जागरूक कवि का समकालीन जिन्दगी पर दिया गया एक सार्थक वक्तव्य -

आप किस इन्सानियत की बात कर रहें हैं?
मैनें इन्सानियत का बेढंगा नाच
कल रेवले स्टेशन पर देखा था
जनूनी
नफरत की आग से भड़के
एक जवान को मार रहे थे
क्योंकि वह दूसरे मजहब का था।।

पर इस दहशत गर्द माहौल में सबकुछ ठीक होना इतना आसान नहीं है। रचनाकार तो व्यथित होकर रचना मात्र कर सकता है - यह उसकी सीमा है। स्टीफन गिल भी इसी सीमा से वाकिफ हैं और अपनी ''देखता रहा'' शीर्षक कविता में उन्होनें रचनाकार की इन्हीं सीमाओं का इज़हार किया है -

मैं देखता रहा
खुदा के घरों का
सियासत के लिये इस्तेमाल
इबादत
जिसको खरीदा जाता है
खैरात
जो सिर्फ नाम के लिए थी
मैं देखता रहा

ब्याह जो बिकता है

प्यार जो सौदेबाजी थी

दोस्ती जो वक्ती है

कुर्बानी जिसे कोई पूछता नहीं

यह सब कुछ

होता रहा

मैं चुप रहा

मैं देखता रहा।।

वस्तुतः अपनी सीमाओं का अहसास ही रचनाकार में दायित्व पैदा करता है और साथ ही एक खास किस्म की बेचैनी भी, जो अपनी सीमाओं से वाकिफ होने पर ही पैदा होती है। स्टीफन गिल की कविता में यह बेचैनी बहुत तीव्रता के साथ व्यक्त हुई है -

मुद्दतों से इसके बारे

दिल खोलकर

लिखना चाहता रहा

कई और भी जख्म हैं

अफसोस

वायदा निभा न सका।।

- यह बेचैनी ही स्टीफन गिल को शान्त नहीं बैठने देगी और यही बेचैनी उनसे और कुछ नया लिखवायेगी, जो हम सभी को अमन के जज़ीरे का ख्वाब हकीकत में बदलने के लिए प्रेरित करेगा।

\- \- \- \- \- \- \- \- \-

वैशाली चन्द्रा हिन्दी विषय से जूनियर रिसर्च फैलोशिप प्राप्त हैं तथा ''मन्नू भण्डारी और मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों के पुरूष चरित्रों का तुलनात्मक अध्ययन '' विषय पर शोध कर रहीं हैं। कई पत्र-पत्रिकाओं में इनकी कविताएं, कहानियां, लेख तथा पुस्तक समीक्षा प्रकाशित हो चुकीं हैं।